.4. नाखून क्यों बढ़ते हैं

लेखक परिचय

लेखक → हजारी प्रसाद द्विवेदी

जन्म → 1907 ई0 में बलिया (उप्र प्रदेश) में हुआ था |

→ इसे भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण पुरस्कार दिया गया |

→ द्विवेदी जी को अलोक पर्व पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला |

प्रमुख स्थान → अशोक के फूल पृथ्वीराज रासौ विचार और विर्तक, आलोक पर्व ,बाण भट्ट की आत्मकथा, विश्वभारती (शांति निकेतन) हिंदी साहित्य की , आदि काल, हिंदी साहित्य की भूमिका

* मृत्यु → 1979 ई० में दिल्ली

पाठ का सारांश

- बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं। मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं सोच में पड़ गया। हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं। बच्चे कुछ दिन तक अगर उन्हें बढ़ने दें, तो माँ-बाप अकसर उन्हें डाँटा करते हैं। पर कोई नहीं जानता कि ये अभागे नाखून क्यों इस प्रकार बढ़ा करते हैं। काट दीजिए वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे पर निर्लज्ज अपराधी की भांति फिर छूटते ही सेंध पर हाजिर।
- कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा। उसे नाखून की जरूरत थी। उसकी जीवन-रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दाँत भी थे पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंदियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा। पत्थर के ढेले और पेंड की डालें काम में लाने लगा। उसने हड्डियों के भी हथियार बनाये। मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाए। पलीतेवाली बंदूकों ने, कारतूसों ने, तोपों ने, बमों ने, बमवर्षक वायुयानों

ने इतिहास को किस कीचड़ भरे घाट पर घसीटा है, यह सबको मालूम है। नखधर मनुष्य अब एटम बम पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है। पर उसके नाखून अब भी बढ़ रहे थे।

- कुछ हजार साल पहले मनुष्य ने नाखून को सुकुमार विनोदों के लिए उपयोग में लाना शुरू किया था। वात्स्यायन के कामसूत्र से पता चलता है कि आज से दो हजार वर्ष पहले का भारतवासी नाखूनों को जम के संवारता था। उनके काटने की कला काफी मनोरंजक बताई गई है। त्रिकोण, वर्तुलाकार, चंद्राकार दंतुल आदि विविध आकृतियों के नाखून उन दिनों विलासी नागरिकों के न जाने किस काम आया करते थे। उनको सिक्थक (मोम) और अलंक्तक (आलता) से यत्नपूर्वक रगड़कर लाल और चिकना बनाया जाता था। गौड़ देश के लोग उन दिनों बड़े-बड़े नखों को पसंद करते थे और दक्षिणात्य लोग छोटे नखों को। लेकिन समस्त अधोगामिनी वृत्तियों को और नीचे खींचनेवाली वस्तुओं को भारतवर्ष ने मनुष्योचित बनाया है, यह बात चाहूँ भी तो भूल नहीं सकता।
- 15 अगस्त को जब अंगरेजी भाषा के पत्र 'इण्डिपेण्डेन्स की घोषणा कर रहे थे, देशी भाषा के पत्र 'स्वाधीनता दिवस की चर्चा कर रहे थे। इण्डिपेण्डेन्स का अर्थ है स्वाधीनता 'शब्द का अर्थ है अपने ही अधीन' रहना। उसने अपने आजादी के जितने भी नामकरण किए, स्वतंत्रता, स्वराज्य, स्वाधीनता-उन सबमें 'स्व' का बंधन अवश्य रखा। अपने-आप पर अपने-आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता है।
- मनुष्य झगड़े-डंटे को अपना आदर्श नहीं मानता। गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है और वचन, मन और शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत आचरण मानता है। यह किसी भी जाति या वर्ण या समुदाय का धर्म नहीं है। यह मनुष्यमात्र का धर्म है। महाभारत में इसीलिए निर्वैर भाव, सत्य और अक्रोध को सब वर्गों का सामान्य धर्म कहा है –

  एतद्धि विततं श्रेष्ठं सर्वभूतेषु भारत!
  निर्वैरता महाराज सत्यमक्रोध एव च।
- अन्यत्र इसमें निरंतर दानशीलता को भी गिनाया गया है। गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि वह सबके दुःख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है।
- ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी। शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा। .

- नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस 'स्व'-निर्धारित आत्म-बंधन का पुल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है। कमबख्त नाखून बढ़ते हैं तो बढ़े, मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा।

4. नाखून क्यों बढ़ते

Short answer question

1. (i) आर्य क्यों विजयी हुए? अनेक जातियों के हारने का मूल कारण क्या था ?

उत्तर - आर्यों के पास लोहे के अस्त्र और घोड़े थे। असुरों के पास लोहे के अस्त्र और घोड़े नहीं थे, अतः आर्य विजयी हुए (और असुर परास्त हुए)। नाग, सुपर्ण, यक्ष, गंधर्व, असुर और राक्षस जातियाँ इसलिए हारी, क्योंकि उनके पास लोहे के अस्त्र नहीं थे।

(ii) इतिहास को कीचड़ भरे घाट तक घसीटने का काम किसने किया ?

उत्तर - इतिहास को कीचड़भरे घाट तक घसीटने का काम पलीतेवाली बंदूकों, कारतूसों, तोपों, बमों और बमवर्षक वायुयानों ने किया है।

(iii) आज भी प्रकृति मनुष्य के साथ कैसा व्यवहार कर रही है ?

उत्तर - मनुष्य बार-बार नाखून काटता है और हर बार उसके नाखून बढ़ जाते हैं। इसका सीधा-सा अर्थ हुआ कि प्रकृति मनुष्य को उसके भीतर वाले अस्त्र से उसे वंचित करना नहीं चाहती। वह अब भी मनुष्य को उसकी हिंसक वृत्ति की याद दिला देती है और मनुष्य से कहती है कि नाखून को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वह मनुष्य से कहती है कि सभ्यता के इस दौर में भी वह लाख वर्ष पहले वाला ही अपने नखों और दाँतों पर अवलंबित पशु है, अर्थात उसकी हिंसक वृत्ति में थोड़ी भी कमी नहीं आई है।

(iv) देवताओं के राजा को मनुष्यों के राजा से किस चीज की सहायता लेनी पड़ती थी ?

उत्तर - देवताओं के राजा को मनुष्यों के राजा से अपनी विजय के लिए लोहे के अस्त्रों की माँग करनी पड़ती थी।

2. (i) निबंधकार हजारीप्रसाद द्विवेदी हैरान होकर क्या सोचते हैं ?

उत्तर - निबंधकार हजारीप्रसाद द्विवेदी इस बात पर हैरान हैं कि यदि आज कोई बच्चा अपने नाखून नहीं काटता, तो उसे अपने अभिभावक या माता-पिता से डाँट खानी पड़ती है। पर, ठीक इसके विपरीत, आदिम युग में यदि कोई बच्चा अपने नाखून काट डालता था, तो उसे अपने अभिभावकों से डाँट खानी पड़ती थी। ऐसा मानवीय प्रवृत्ति में आए हुए बदलाव से ही संभव जान पड़ता है।

(ii) निबंधकार ने नाखून के प्रति आज मनुष्यों की किस प्रवृत्ति का जिक्र किया है ?

उत्तर - संभवतः आज मनुष्य नाखून को नहीं चाहता। वह नहीं चाहता कि बर्बर युग का कोई चिह्न उसके भीतर रह जाए।

(iii) नाखून और मनुष्य के संबंध को लेकर निबंधकार किस वैचारिक द्वंद्व में उलझा हुआ है ?

उत्तर - नाखून और मनुष्य के संबंध को लेकर निबंधकार एक वैचारिक द्वंद्व में उलझा हुआ है। कभी उसे ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। वह नहीं चाहता कि बर्बर युग के अवशेष के रूप में नाखून उसके अस्तित्व के साथ जुड़े रहें। नाखून उसे अब असह्य हैं। पर, कभी निबंधकार को लगता है कि मनुष्य बर्बरता के प्रतीक, नाखूनों से अपने लगाव को कम करना नहीं चाहता। उसकी बर्बरता तो दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। हिरोशिमा का नरसंहार इसका उदाहरण है।

(iv) निबंधकार मनुष्य के नाखून की ओर देखकर निराश क्यों हो जाता है ?

उत्तर - निबंधकार मनुष्य के नाखून की ओर देखकर निराश इसलिए हो जाता है, क्योंकि उसे लगता है कि ये (नाखून) उसकी भयंकर पाशविक वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं।

(v) लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना कहाँ तक संगत है ?

उत्तर - जब मनुष्य जंगली था, तब उसे अपनी रक्षा के लिए नाखूनों की जरूरत थी। नाखून ही उसके लिए अस्त्र थे। अतः लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना सर्वथा संगत है।

3. (i) हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल क्या है? हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता क्या है ?

उत्तर - भारतीय चित्त 'अनधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है, यह हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल है। अँगरेजी शब्द 'इनडिपेंडेंस' का अर्थ है 'अनधीनता' या 'किसी की अधीनता का अभाव । अँगरेजी शब्द 'इनडिपेंडेंस' के लिए हिंदी में 'स्वाधीनता' शब्द का प्रयोग होता है, 'अनधीनता' का नहीं। 'स्वाधीनता' में अपनी अधीनता है। यह शब्द हमारे सांस्कृतिक चिंतन की विराटता और उदात्तता को प्रस्तुत करता है। हमारी संस्कृति की विशेषता है- अपने-आप पर अपने-आप द्वारा लगाया हुआ बंधन। यही 'स्वाधीनता' है।

(ii) "मैं ऐसा भी नहीं सोच सकता कि हम नई अनुसंधित्सा के नशे में चूर अपना सर्वस्व खो दें।" लेखक के इस कथन का अभिप्राय स्पष्ट करें।

उत्तर - निबंधकार हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि यह बात भी सही नहीं है कि हम अनुसंधान करने की प्रबल इच्छा के दबाव में अपने प्राचीन की महत्ता को अस्वीकार कर दें। हमें अपने प्राचीन की महत्ता को अवश्य स्वीकार करना चाहिए तथा प्राचीन और नवीन में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

(iii) कालिदास ने नए-पुराने के संबंध में क्या कहा है ? लेखक ने इसपर कैसी टिप्पणी की है ?

उत्तर - कालिदास ने कहा है कि सब पुराने अच्छे नहीं होते और सब नए खराब ही नहीं होते। विवेकशील लोग दोनों की जाँच कर लेते हैं। जो हितकर हैं, वे उसे स्वीकार कर लेते है और अहितकर का त्याग कर देते है| मूढ़ लोग दुसरें के इशारे पर भटकते रहते है |

कालिदास के उक्त कथन पर टिप्पणी करते हुए हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि हमें प्राचीन और नवीन की परीक्षा करनी चाहिए और इन दोनों में जो हितकर हो, उसे अपनाना चाहिए। वे इसके साथ यह भी कहते हैं कि "यदि हमारे पूर्वसंचित भंडार में वह हितकर वस्तु निकल आवे, तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है?"

4. (i) निबंध में लेखक ने किस बूढ़े का जिक्र किया है? लेखक की दृष्टि में बूढ़े के कथनों की सार्थकता क्या है?

उत्तर - लेखक ने निबंध में महात्मा गाँधी को 'बूढ़े' के रूप में उल्लिखित किया है। लेखक की दृष्टि में 'बूढ़े' (महात्मा गाँधी) के कथनों में मनुष्य की सफलता का नहीं, उसकी सार्थकता (चरितार्थता) का जिक्र हुआ है। भौतिक संपदा मानवजीवन को सफल बनाती है और आत्मिक संपदा मानवजीवन

को सार्थक बनाती है। 'सफलता' का संबंध अधिक-से-अधिक मशीन बैठाने, अधिक-से-अधिक उत्पादन बढ़ाने, धन की वृद्धि करने और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाने से है। पर, बूढ़े (गाँधीजी) ने भौतिक समृद्धि के स्थान पर मानवीय संवेदनाओं के विकास पर ध्यान दिया; सात्त्विक वृत्तियों के विकास को मानवहित में उचित ठहराया। उन्होंने प्रेम, आत्मतोष और भीतर के विकास पर बल दिया। लेखक की दृष्टि में 'बूढ़े' के कथनों की यही सार्थकता है. कि सात्त्विक वृत्तियों के विकास से ही मानवजीवन सार्थक हो सकता है। मानवजीवन की चरितार्थता से ही विश्व में शाश्वत शांति की स्थापना हो सकती है। 'सफलता' पाशविक वृत्तियों को उकसाती है और 'चरितार्थता' विश्व में अमन-चैन की स्थापना करती है।

(ii) बड़े-बड़े नेताओं और 'बूढ़े' के कथन में क्या अंतर है?

उत्तर - बड़े-बड़े नेता भौतिक समृद्धि को मानवजीवन का लक्ष्य मानते हैं जबकि गाँधीजी (बूढ़ा) आंतरिक समृद्धि को। बड़े-बड़े नेता कहते हैं- "सुख ही मानवजीवन का उद्देश्य है। इसके लिए अधिक-से-अधिक मशीन बैठाने, उत्पादन बढ़ाने, धन की वृद्धि करने तथा बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाने की आवश्यकता है।" लेकिन, ठीक इसके विपरीत, गाँधीजी (बूढ़ा) कहते हैं कि "मानवजीवन के लिए बाहरी विकास की नहीं, आंतरिक विकास की जरूरत है।" उन्होंने क्रोध, द्वेष आदि को त्यागने की बात की और प्रेम करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि आंतरिक गुणों से मानवजीवन सार्थक होता है।

(iii) 'बूढ़े' को क्यों गोली मार दी गई? इस हत्याकांड में मनुष्य की कौन-सी प्रवृत्ति हावी हुई ?

उत्तर - 'बूढ़े' (गाँधीजी) ने भीतर को महत्त्व दिया; मानवीय संवेदनाओं की महत्ता का प्रतिपादन किया और जीवन में प्रेम की महत्ता का निरूपण किया। उन्होंने उच्छृंखलता को पाशविक वृत्ति माना तथा 'स्व' के बंधन पर जोर दिया। उनकी बात वैसे लोग नहीं समझ सके जिनके लिए बाह्य प्रगति ही सब कुछ थी। गाँधीजी की हत्या कर दी गई। इस हत्याकांड में आदमी के नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति हावी हुई।

(iv) 'बूढ़े' ने क्या पता लगाया था ?

उत्तर - 'बूढ़े' (महात्मा गाँधी) ने मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता था। मनुष्य की चरितार्थता इस बात में है कि वह अपने आंतरिक गुणों का विकास करे, भौतिक सुख-सुविधाओं को

अपने जीवन का लक्ष्य न बनाए। वह बाहर की ओर नहीं, भीतर की ओर देखे; हिंसा, क्रोध, द्वेष और मिथ्या को दूर करे, लोक के लिए कष्ट सहन करे, प्रेम की बात सोचे और आराम की बात मन में न लाए; स्वार्थ का त्याग कर 'स्व' के बंधन से मुक्त होने की बात सोचे, संतोष को जीवन में महत्त्वपूर्ण माने तथा उच्छृंखलता को पशुवृत्ति मानकर उसका त्याग करे।

(v) बढ़ते नाखून द्वारा प्रकृति मनुष्य को क्या याद दिलाती है?

उत्तर - बढ़ते नाखून द्वारा प्रकृति मनुष्य को याद दिलाती है कि वह अब भी लाख वर्ष पहले वाला नख-दंतावलंबी जीव है। वह (मनुष्य) सभ्य तो हुआ है, पर पशुता से सर्वथा मुक्त नहीं हो सका है।

Long answer question

1. (i) 'सफलता' और 'चरितार्थता' शब्दों में लेखक अर्थ की भिन्नता किस प्रकार प्रतिपादित करता है ?

उत्तर - 'सफलता' और 'चरितार्थता' शब्द भिन्नार्थक हैं। इन दोनों शब्दों में अंतर है। 'सफलता' का संबंध मनुष्य के भौतिक विकास से है और 'चरितार्थता' का संबंध उसके आत्मिक विकास से है। धन-दौलत तथा अनेक बाह्य साधनों से हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, पर जीवन को चरितार्थ करने के लिए धन-दौलत तथा नानाविध भौतिक सुख-सुविधाओं की सामग्रियों को जुटाने की आवश्यकता नहीं होती, उसके लिए केवल अपनी मानवीय संवेदनाओं को विकसित करना पड़ता है।

(ii) लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना कहाँ तक संगत है ?

उत्तर - जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा, तब उसे अपनी रक्षा के लिए नाखूनों की जरूरत थी। वास्तव में, नाखून ही उसके लिए अस्त्र (हथियार) थे। वह अपने प्रतिद्वंद्वियों से जूझने और उन्हें परास्त करने में अपने नाखूनों की मदद लिया करता था। अतः, लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र रूप में देखना सर्वथा संगत है।

2. (i) नाखून क्यों बढ़ते हैं? यह प्रश्न लेखक के सामने कैसे उपस्थित हुआ ?

उत्तर - एक दिन लेखक (हजारीप्रसाद द्विवेदी) की छोटी लड़की ने उनसे - अचानक पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं। इस प्रश्न के उत्तर के लिए लेखक पहले से तैयार नहीं था, अतः वह

थोड़ा असहज हो गया। लेखक जब सहज हुआ तब उसने अपनी लड़की के प्रश्न पर चिंतन शुरू किया। परिणामस्वरूप, 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध अस्तित्व में आया।

(ii) बढ़ते नाखूनों द्वारा प्रकृति मनुष्य को क्या याद दिलाती है ?

(ii) बढ़ते नाखूनों द्वारा प्रकृति मनुष्य को याद दिला देती है कि उसके नाखून को विस्मृत नहीं किया जा सकता। प्रकृति मनुष्य को याद दिलाती हुई कहती है कि तुम लाख वर्ष पहले के अपने नखों और दाँतों पर अवलंबित जीव हो- - वास्तव में तुम अब भी पशु ही हो, उन्हीं की तरह आचरण करनेवाले। तुम इतने सभ्य हो गए फिर भी तुम पशु की तरह हिंसक, जड़, क्रोधी, ईर्ष्यालु और विवेकहीन हो।

(iii) मनुष्य बार-बार नाखूनों को क्यों काटता है ?

(iii) नाखून पशुता के प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार काटा जाता है, वह उतनी ही बार जन्म ले लेती है और मनुष्य है कि वह अपने से पशुता को निकालकर सच्चे अर्थों में मनुष्य बना रहना चाहता है। अतः, पशुता के प्रतीक नाखून जब भी बढ़ते हैं, तब ही मनुष्य उन्हें काट डालता है।

3. (i) नाखून बढ़ाना और उन्हें काटना कैसे मनुष्य की सहजात वृत्तियाँ हैं ? इनका क्या अभिप्राय है?

उत्तर - नाखून बढ़ाने की सहजात वृत्ति मनुष्य के जीवन में इच्छाओं की प्रबलता की द्योतक है। जब तक मनुष्य 'मनुष्य' नहीं बनता तब तक वह नाखून बढ़ाने की ओर (हिंसक वृत्ति की ओर) प्रवृत्त रहता है। मनुष्य 'मनुष्य' बनकर नाखून काटने हिंसक वृत्ति को मारने) की सहजात वृत्ति से पूर्ण हो जाता है। नाखून बढ़ाना पशु- स्तर पर घटित होता है तथा नाखून काटना मनुष्य स्तर पर।

(ii) मनुष्य की पूँछ की तरह उसके नाखून भी एक दिन झड़ जाएँगे। प्राणि- शास्त्रियों के इस अनुमान से लेखक के मन में कैसी आशा जगती है ?

उत्तर - प्राणिशास्त्रियों ने यह अनुमान लगाया है कि जिस तरह मनुष्य के लिए अनावश्यक अंग होने के कारण उसकी पूँछ झड़ गई, उसी तरह एक दिन उसके (मनुष्य के) सारे अनावश्यक और अनुपयोगी अंग झड़ जाएँगे। इस अनुमान से लेखक के मन में आशा जगती है कि एक दिन मानव की पशुता भी समाप्त हो जाएगी।

(iii) लेखक की दृष्टि में हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

उत्तर - लेखक की दृष्टि में हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने भारत में आई अनेक जातियों के लिए एक सामान्य धर्म खोज निकाला है। यह धर्म है – अपने ही बंधनों से अपने को बाँधना। 'स्व' का बंधन भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है।

4. नाखून क्यों बढ़ते

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित पाठ है -

(A) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(B) बहादुर

(C) आविन्यों

(D) मछली

Ans – (A)

2. कौन-सा निबंध नई पीढ़ी में सौन्दर्य बोध, इतिहास चेतना और सांस्कृतिक आत्मगौरव का भाव जगाता है ?

(A) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

(B) नागरी लिपि

(C) बहादुर

(D) नाखून क्यों बढ़ते हैं

Ans – (D)

3.'नाखून क्यों बढ़ते हैं' हिन्दी की कौन विद्या है ?

(A) ललित निबंध

(B) कहानी

(C) कविता

(D) उपन्यास

Ans – (A)

4. ललित निबंध है -

(A) मछली

(B) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(C) बहादुर

(D) नौबत खाने में इबादत

Ans – (B)

5.'नाखून क्यों बढ़ते हैं' के रचनाकार कौन है ?

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C) गुणाकर मुले

(D) अमरकांत

Ans – (B)

6. हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

(A) 1907 – दुबे छपरा, बलिया

(B) 1916 - बदरघाट, पटना

(C) 1935 - अमरावती, महाराष्ट्र

(D) 1925 - नागरा बलिया

Ans – (A)

7. नाखून किसका प्रतीक है -

(A) पाशवी वृत्ति का

(B) मानवता का

(C) प्रेम का

(D) पौरुष का

Ans – (A)

8. हम बार-बार नाखून क्यों काटते हैं ?

(A) स्वच्छ रहने के लिए

(B) बर्वरता समापन हेतु

(C) सुंदरता के लिए

(D) मजबूरी से

Ans – (A)

9. द्विवेदी जी से किसने पूछा था- नाखून क्यों बढ़ते हैं ?

(A) लड़के ने

(B) छोटी लड़की ने

(C) पत्नी के

(D) नौकर ने

Ans – (B)

10. काट दीजिए वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति फिर छूटते ही सेंध पर हाजिर। प्रस्तुत पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई है ?

(A) नागरी लिपि

(B) परंपरा का मूल्यांकन

(C) आविन्यों

(D) नाखून क्यों बढ़ते हैं

Ans – (D)

11. काट दीजिए वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति फिर छूटते ही सेंध हाजिर। उपर्युक्त कथन में निर्लज्ज अपराधी किसे पर कहा गया ?

(A) चोरों को

(B) वनमानुष को

(C) जंगली जानवरों को

(D) नाखून को

Ans – (D)

12. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किसके बहाने अत्यंत सहज शैली में सभ्यता और संस्कृति की विकास गाथा उद्घाटित कर दिखायी है ?

(A) आँखों

(B) सुंदरता

(C) नाखूनों

(D) कानों Ans – (C)

13. हजारी प्रसाद द्विवेदी किस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं प्रशासनिक पद पर रहे ?

(A) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

(B) शांति निकेतन विश्वविद्यालय

(C) चंडीगढ़ विश्वविद्यालय

(D) सभी

Ans – (D)

14. द्विवेदी जी को किस रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ?

(A) आलोकपर्व

(B) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(C) कुटुज

(D) अशोक के फूल

Ans – (A)

15. लेखक के अनुसार मनुष्य के नाखून किसके जीवंत प्रतीक है ?

(A) मनुष्यता के

(B) सभ्यता के

(C) पाशवी वृत्ति के

(D) सौन्दर्य के

Ans – (C)

16. सहजात वृत्तियाँ किसे कहते हैं ?

(A) अस्त्रों के संचयन को

(B) अनजान स्मृतियों को

(C) 'स्व' के बंधन को

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (B)

17. हजारी प्रसाद द्विवेदी के कौन-सा निबंध नई पीढ़ी में सौन्दर्यबोध, इतिहास चेतना और सांस्कृतिक आत्मगौरव का भाव जगाता है ?

(A) अशोक के फूल

(B) कुटज

(C) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(D) आलोक पर्व

Ans – (C)

18. लेखक के अनुसार नाखुन की विविध आकृतियाँ कौन-सी हैं ?

(A) त्रिकोण

(B) वर्तुलाकार

(C) चंद्राकार

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (D)

19.'विचार और वितर्क किस लेखक की रचना है ?

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(B) महात्मा गांधी

(C) गुणाकार मुले

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – (A)

20. 'नाखून बार-बार काटते रहना और अलंकृत करते रहना निरूपित करता है -

(A) सौन्दर्यबोध और सांस्कृतिक चेतना का

(B) सुन्दरता बढ़ाने का

(C) अच्छे व्यवहार का

(D) सुन्दरता और स्वास्थ्य पर ध्यान देने का

Ans – (A)

21.'मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती..... पर पंक्ति किस शीर्षक पाठ की है ?

(A) विष के दांत

(B) बहादुर

(C) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(D) मछली

Ans – (C)

22. किसने कहा था कि सब पुराने अच्छे नहीं होते, सब नए खराब ही नहीं होते हैं ?

(A) मैक्समूलर

(B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C) स्वामी विवेकानंद

(D) कालिदास

Ans – (D)

23. दधीचि की हड्डी से क्या बना था ?

(A) इंद्र का बज्र

(B) धनुष

(C) त्रिशुल

(D) तलवार

Ans – (A)

24. 'कुटज' के रचनाकार हैं -

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) अमरकांत

(D) गुणाकर मुले

Ans – (A)

25.'आलोक पर्व' किनकी कृति है ?

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) अमरकांत

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(D) विनोद कुमार शुक्ल

Ans – (C)

26. मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र घटाने की ओर? प्रस्तुत पंक्ति किस रचना के हैं ?

(A) मैक्समूलर

(B) गुणाकार मुले

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(D) विनोद कुमार शुक्ल

Ans – (C)

27.'विचार-प्रवाह' किस लेखक की रचना है ?

(A) भीमराव अंबेडकर

(B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C) यतीन्द्र मिश्र

(D) अमरकांत

Ans – (B)

28.'पुराने का मोह सब समय वांछनीय ही नहीं। होता'-यह पंक्ति किस शीर्षक पाठ की है ?

(A) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(B) बहादुर

(C) मछली

(D) नागरी लिपि

Ans – (A)

29. किस देश के लोग बड़े-बड़े नख पसंद करते थे ?

(A) अंगदेश के

(B) गांधार के

(C) कैकय देश के

(D) गौड़ देश के

Ans – (D)

30. 'अनामदास का पोथा उपन्यास किस लेखक की कृति है ?

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(B) यतीन्द्र मिश्र

(C) अमरकांत

(D) महात्मा गाँधी

Ans – (A)

31. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'निर्लज्ज अपराधी' किसे कहा है ?

(A) डकैत को

(B) चोर को

(C) हत्यारे को

(D) नाखून को

Ans – (D)